

२३
नृगवह ॥ गनधिर्विश्वदहाः
नाक्षत्रिष्टुदसिसूर्यविष्णुमा
रासिभावनम् ॥ ॥

सिन्धुनगिचक ॥ ॐ त्वञ्जवि
ष्टदाद्युषानृपादिष्टुधूधोगि
नष्टानक्राणाकमूतस्मना ॥ ॥

आधिर्वादस्वानतिग ॥ ॥

ॐ ध्रुवासिध्रुवायीयजमानासि

य न्नागन उपजापद्युरिरुह्यान्

घृतनयावापृथिवीपूर्यथाः

सिन्दुस्यक्तुदिनसिर्विष्णुजन

स्यक्ताया ॥ ॥ धीश्वतलक्ष्मी

श्वधन्यावहात्राण्यारब्धनक्ष

त्रादिनूपमब्धिनावारुम् ।

ॐ ध्रुन्निषानामुष्म ॐ षाधोस

र्वलाकम् ॐ षाध ॥ ॥

ॐ कामरूपमदृद्यध्रुमिगायव

नृक्षायवा ॐ न्दायाश्विष्यापूषू

ॐ अर्धमासाय स्वाहा ॥

ॐ वल्लभाय स्वाहा ॥

ॐ वासाय स्वाहा ॥

ॐ हनुमन्काय स्वाहा ॥

ॐ विरिषनाय स्वाहा ॥

ॐ कृपाय स्वाहा ॥

ॐ पद्मनाभाय स्वाहा ॥

ॐ मार्कण्डेय स्वाहा ॥

ॐ अर्धमासाय स्वाहा ॥ दृग्वर्

ॐ शिवाय स्वाहा ॥

ॐ अग्निनाय स्वाहा ॥

ॐ नक्षत्राय स्वाहा ॥

ॐ मूर्ध्नाय स्वाहा ॥

ॐ योग्याय स्वाहा ॥

ॐ अग्न्याय स्वाहा ॥

ॐ मन्त्राय स्वाहा ॥

ॐ नाभ्याय स्वाहा ॥

ॐ नभ्याय स्वाहा ॥

ॐ वाल्मीकिनाय स्वाहा ॥

ॐ उर्वारवाचने स्वाहा ॥

ॐ अर्धमासाय स्वाहा ॥

ॐ कुमायाय स्वाहा ॥

ॐ परासाय स्वाहा ॥

ॐ नदीनृन्नाय स्वाहा ॥

ॐ वृद्धाय स्वाहा ॥

ॐ विष्णवे स्वाहा ॥

ॐ नृपाय स्वाहा ॥

ॐ धर्मकलाय स्वाहा ॥

ॐ योग्याय स्वाहा ॥

ॐ नृन्नाय स्वाहा ॥

कनसप्रतिष्ठा ॥

ॐ रघुवत्सवाय स्वाहा ॥

ॐ संपूर्णकनकाय स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ आशिषकनसंमन्त्राविष्ठा

स्ति नृवशापूनमूर्त्तिनिवर्त्तस्वः

सान् ४ सरुमुभूक्ता नृन्नाय स्वाहा

स्वतीपूनमूर्त्तिनिवर्त्तनाय स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ नृन्नाय स्वाहा ॥

ॐ दधिउमापनय स्वाहा ॥

ॐ दधिकाप्र। श्रुका निषडिः ॥
 ग्वस्य वा डिनः ॥ सूत्रलिभामूः
 खाकनस्य धाश्रुयूः ॥ विता निषण्ण
 सगुन प्रणिष्टा ॥ ॥
 ॐ गधपतय स्वाहा ॥
 ॐ गधस्थगधनिस्यथवानमा
 नमावागस्थावागपगिर्यथवान
 मानमागृत्स्यः ॥ गृत्सुपगिर्यथ
 वानमानमाविनूपस्थाविनूप
 स्यथवानमानमः ॥ ॥
 गधपतिवलिप्रणिष्टा ॥ ॥
 ॐ पञ्चममरुः ॥ स्वाहा ॥ ॥
 ॐ जार्यलोः ॥ पृष्ठिनकमिदस
 दमातनैपूः ॥ पिनैवप्रयत्न
 ॥ ॥ एभमसु प्रणिष्टा ॥ ॥
 ॐ कोमानिमयूनास्त्याय स्वाहा ॥ ॥
 ॐ यागवदससूनवामसाममः
 नातीयगानिदहागवदः ॥ सूत्रः
 पनिषदनिदून्मनिविच्छदवः
 सिभूदूभिगात्यग्निः ॥ ॥ ॐ निकोमा

निपनिष्टा ॥
 गृधपञ्चवलिप्रणिष्टा ॥ ॥
 ॐ नेवदूजयि स्वाहा ॥
 ॐ गननाधाय स्वाहा ॥
 ॐ अम्बिकार्य स्वाहा ॥
 ॐ निवक्रगुणनाय स्वाहा ॥
 ॐ दिगक्रगुणालाय स्वाहा ॥
 ॐ विषूक्रगुणालाय स्वाहा ॥
 ॐ स्वस्थानक्रगुणालाय स्वाहा ॥
 ॐ ॐ हवस्थाने अमूकक्रगाय
 अमूकदव्य स्वाहा ॥ ॥ ॐ नमा
 वस्तुभाय आधिननातीपतय न
 मानमारुवस्यहर्षेः ॥ गनीपतयः
 नमानमा नूदायानगायिनैकगध
 म्पतय नमः ॥ सूनायाहर्षेः वनानीप
 तयनमानमः ॥ स्वाहा ॥
 ॐ निपञ्चवलिप्रणिष्टा ॥ ॥
 ॐ ॐ सूर्यानागाय धप्रणिष्टा ॥ ॥
 ॐ श्रीसूर्याय स्वाहा ॥
 ॐ नानायधाय स्वाहा ॥

ॐ सदा शिवाय स्वाहा ॥
 ॐ गुरु लक्ष्मीय ॥ स्वाहा ॥
 ॐ ॐ हृदय गेय ॥ स्वाहा ॥
 ॐ नाग नाड्य ॥ स्वाहा ॥
 ॐ आकृष्ट न नडा सावरुमानानि
 वंशं न मूलमस्यैव । दिन न्याय
 न सवित्वैर्यनादवाकानि पुवनाः
 नि पञ्चम ॥ स्वाहा ॥ ॥
 ॐ विष्णु न नाटमसि विष्णु स पण
 द्या विष्णु स न सि विष्णु विष्णु स सि
 वेष्णु वमसि विष्णु वत्वार्य स्वाहा ॥
 ॐ नमः ॥ सकृदाय च मया कृत्वा
 यै नमः ॥ मेकनाय च मया कृत्वा
 च नमः ॥ शिवाय च शिव न नाय
 च स्वाहा ॥ ॥ ॐ श्री श्वर श्वः
 लक्ष्मी श्व पत्न्या वहा नाग पा ॥ ह्व
 न श्रुगानि नृपम ध्विनी वारुम ।
 ॐ ॐ निषा दमिमा ॐ ॐ सा दसर्व
 लोक म्मा ॐ ॐ सा द ॥ स्वाहा ॥ ॥

ॐ वृहस्पति नृति य दयार्जुनाय
 म विष्णु कि कुमुत ऊन पूत्य दीप
 य च वस अग प्रजा नत दस्मासु
 दुविधा ॥ हृदि निष्पम ॥ ॥
 ॐ नमामु स पर्षथाय कच पृथिवी
 मनू ॥ य नृ नृ क्रिय दितितरय ॥
 स पर्षथा नमः ॥ ३ ॥ ॥
 शिना द्रु गि नृ शा न न हा ना ॥ १० ८ ॥
 ॐ मना द्रु गि र्श पना मा कस्य वृहः
 स गिर्य हृ मि मे कना त्व विष्टे य
 हृ ॐ स मि मे दधातु । विष्णु दवा
 स ॐ ह मा दय का २ प्र गि प्र गिष्ट
 ॥ ॐ गि कन स प्र गिष्टा ॥ ॥ नाय
 हा न द्यु वा न त्वा य ॥ ॥
 तता मे क्रा द्रु गि का न य ० ॥ ॥
 महा वा द्रु गि म नृ द्यु ता पा ॥ १० ८ ॥
 ॐ नृ सी ख्या ता म हृ सा क्षि य नृ द्यु
 धि त्वा म । रा षा ॐ स हृ मु या ऊन
 व ध न्वा नि गे न्म सि ॥ ॥

ॐ तिसैक्राद्रुमिपूधु ॥ ॥
 गणादक्षपातनेद्रुया ॥ ॥
 अथयथाकर्मकुर्यात् ॥ ॥
 गुगुनिष्कामानुगुनिष्कामायः
 थामथन ॥ ॥
 वाक्कायपूजा ॥ ह्वाकायथन ॥
 दसापातनविय ॥ ॥
 ॐ गद्यपद्यस्वाहा ॥ कायिनाय
 दर्वेनिर्गविर्गद्यज्ञना ॥ ॥
 ॐ गद्यनात्वागद्यपरिहृद्दवाम
 ह्वायाधन्वायापहृद्दवामह्
 निधीधन्वानिधीपरिहृद्दवामः
 ह्वावाममभ्रमज्ञानिगर्वधमाः
 सिगर्वधस्वाहा ॥ ॥ कायिनाय ॥
 तवूहा ॥ ॥ ॐ वरूनायस्वाहा ॥
 ॐ नमामुसर्पस्थाजकवपुषिबी
 मनू ॥ यजूकनिक्रयदिविभर्यः
 सर्पस्थानमः ॥ स्वाहा ॥ ॥
 नानायद्यस्तु ॥ ॐ नानायद्यस्तु ॥

ॐ ॐ देविष्टुर्विचक्रमष्टुधातिद
 धपदं म ॥ समूधमस्यपाष्टुसू
 नस्वाहा ॥ ॥ शिवयाग ॥
 ॐ शिवायस्वाहा ॥ ॐ नमः समू
 वायवमयाएवायवनमः संकता
 यवमयस्कनायवनमः शिवा
 यवशिवायनायवस्वाहा ॥ ॥
 काथूपिथि ॥ ॐ थागिर्गस्वाहा
 ॐ अस्मैक्रातासरुग्रीनिजनुजाः
 अक्षिरुम्याम ॥ तेषां ॐ संमुया
 जनवर्धनानिगमसिस्वाहा ॥
 पचति ॥ ॐ नवायस्वाहा ॥
 ॐ जगत्तदसंशुनवामसामम
 नाद्वितीयतानिउदातिवदः
 मनःपनिषुनिदूर्गानिवि
 ध्वनादेवसिन्धुद्विनिताग्नि ॥
 एमपू ॥ ॐ दूर्गयेस्वाहा ॥ ॥
 ॐ पावकानः ॥ मनस्वतीर्वाङ्
 रिर्वाङ्गिनीमती ॥ यहुम्वदू

नूडायतवसकपदिनक्रयदीन
 यप्ररुनामनी॥ यथाहमस
 द्विपदचतुषादविध्वपूक्ष्यः
 मञ्जुस्मिन्ननागुनम् ॥ ॥
 नावनदव ॥ ॐ अस्मिन्नागासह
 आधियनूजाअधिरुम्याम् ॥ गेषा
 ॐ सहस्रयाजनवधमानिगन्तु
 सि ॥ ॥ नैसानरुगवनि ॥ ॐ
 रगवलेखाहा ॥ ॐ अम्बा अम्बि
 क अम्बालिकेनमानयगिकथ
 न ॥ ससहस्रयक ॥ सुरादिकाः
 कथपीलवासिनीन् ॥ ॥ नाड
 दगुलि ॥ ॐ मानेनैवविदयेखा
 हा ॥ ॐ वृहस्पत अग्निष्टदया अ
 हाशुमादिरातिक्रुमर्कनषुप
 दीदयेकवसमगप्रजागरादः
 स्माकृद्विनयदिविगु ॥ ॥
 पधुपगिरि ॥ ॐ पधुपगयस्वा
 हा ॥ ॐ नमः ॥ स्वयं ॥ यपगिरि

यवानभानमोरुवायचनूडायच
 नमः ॥ ॐ वीर्यचनेमै ॥ पधुपगय
 चनमानीलयावायचगिरिक
 धायचस्वाहा ॥ ॥ वीकास्मा ॥
 ॐ गुह्ययस्वाहा ॥ ॐ अम्बि अ
 भिकेनमानयगिकथन ॥ ॥ सस
 एस्वक ॥ सुरादिकाकापीनवासि
 नीस्वाहा ॥ ॥ चगुना ॥ ॥
 ॐ गनूजनायधायस्वाहा ॥ ॐ
 सहस्रणीषापूनुष ॥ सहस्राक ॥
 सहस्रपाद ॥ सस्मि ॥ ॐ सर्वगस्पृ
 ह्वास्मि ॥ ॐ दह ॥ ॐ पुलम ॥ ॥ स्वाहा ॥
 ॐ ॥ ॐ गिरिकिहत्रसिद्धि
 ॥ स्वाहा ॥ ॐ अम्ब अम्बिक अम्बा
 भिकेनमानयगिकथन ॥ ॥ सस
 एस्वक ॥ सुरादीकाकापीनवासि
 नी ॥ स्वाहा ॥ ॥ वृगदवस्तु ॥
 ॐ मञ्जु नूनाथयस्वाहा ॥ ॐ अ
 कृष्णनयकसावरुमानानिवः

मयननमृगं मलयश्च हिमनय
नसविशानाथनादवाजागिरु
वनानीयधम॥ ॥ पासिका॥
ॐ महालक्ष्मीस्वाहा॥ ॐ अर्चय
तासहस्रानियत्रुडाअधिरुम्भा
मा। तथा ॐ सहस्रयाजनवधत्वा
निरन्मसि॥ ॥ कमनागिर्ध
स्त॥ ॐ गद्यपद्यस्वाहा॥ ॐ
गद्यनीत्वागद्यपदि ॐ हवाम
हप्रियानीत्वाप्रियपदि ॐ हवा
महनिधीनान्तानिधिपदि ॐ
हवामहवसामम। अहमजा
निगर्धधमात्वमजासिगर्धध
म॥ ॥ नमधि॥ ॐ कालि
कार्यस्वाहा॥ ॐ यागवेदराक्षु
नवामसामम। आगियगानिद
हागिवेद॥ स्वाहासन॥ पविष
धातिदुर्गानि विष्वा नादवीसि
भून्दुनिताएगि॥ ॥

रिवस्त॥ ॐ कोमालेस्वाहा॥
ॐ अणवाना॥ सम्यगन्तिकुमाः
नायविहिरवा ॐ व। गन्न ॐ ॐ
वृहस्पतिनादिगि॥ धर्मयक्त
गुविष्वाहा॥ धर्मयक्तगुस्वाहा॥
मात्रमदस्त॥ ॥ ॐ किन्नम
स्तादव्यस्वाहा॥ ॐ अर्चय अर्चि
कअर्चयत्रिकनमानयगिकश्च
न॥ सस्वयस्वक॥ सूरदीकीकी
पीत्रवासिनीम्॥ स्वाहा॥ ॥
ॐ नायवा॥ ॐ गरुधायस्वाहा॥
ॐ गद्यनीत्वागद्यपदि ॐ हवा
महप्रियानीत्वाप्रियपदि ॐ ह
वामहनिधीनान्तानिधिपदि
ॐ हवामहवसामम। अहमजा
सिगर्धधमात्वमजासिगर्धधन
॥ स्वाहा॥ य॥ गमृगुनिना ३३
स्त॥ ॐ नायायस्वाहा॥ ॐ विः
भूत्रनामसि विष्वा ॥ ॐ पणुस्त

विष्णुः स्युनसि विष्णुः कुवासि।
वेष्णुवमसि विष्णुवत्वाः स्वाहा॥
॥ तनवलिमसंनस्तु॥ ॐ
ॐ लिमसं नाय स्वाहा॥ ॐ नमः
संगवंच पशुपतयचनमः
उग्रयचरीमायचनमावधः
यचदूनवधायचनमाहं च
हनीयसचनमावृक्ष स्वाहनिक्
(स्वा)नमस्काय स्वाहा॥ ॥
अथकानाक्षस्तु॥ ॐ नानायः
धाय स्वाहा॥ ॐ देविष्णुर्विच
क्रमकुक्षानिदधपदम्॥ ॐ
मूढमस्यपांस्तु स्वाहा॥ ॥
मदूयाजुस्सुवस्तु॥ ॐ अग्नि
ताम्रदिजुस्सुवस्तु स्वाहा॥
ॐ अस्सखागासहस्रानियरुस्या
म्। नेषांस्तु ससुयाजनवधः
नानितन्मासि स्वाहा॥ ॥

मदूसपञ्चगव्यस्वाहा॥ ॐ पञ्च
गव्यपतय स्वाहा॥ ॐ गेधनीत्वा
गव्यपतिं हवामहं प्रियानीत्वा
प्रियपतिं हवामहं निधीनीत्वा
निधिपतिं हवामहं वसामममन्त्र
हमजासि गर्हधमात्वमजासि
गर्हधमा॥ ॥ रत्नं च नस्तु॥
ॐ स्तुनाधिपतिस्तु रत्नं च नायः
स्वाहा॥ ॐ नमः ॥ सैमवायवम
याहवायचनमः ॥ सैकनायचः
मयस्तुनायच। नमः ॥ धिवायः
च धिवायच स्वाहा॥ ॥
अग्निस्तु॥ ॐ मित्रावतुना
दिपञ्चगव्यं स्वाहा॥ ॐ अग्निमू
खादिव ४ कर्कष्यति ४ पृथिव्या
अयं अपांस्तु न तांस्तु मित्रिन्वः
ति॥ ॥ महं च नस्तु॥
ॐ महादवाय स्वाहा॥ ॐ नमः

सहवायचमयाहवायचनम
४संकनायचमयस्कनायच।न
म४हिवायचनिवगनायच॥॥
॥ ॥विष्णुदवनस्तु॥ॐचगु
र्नानायनायस्वाहा॥ॐॐदेवि
पूचिक्कभक्तानिदधपदे।
समूहमस्यपाँसूनस्वाहा॥
॥ ॥नूदवनस्तु॥ॐकादिः
त्रिगनिवायस्वाहा॥ॐनम४
सहवायचनम४संकनायच
मयस्कनायचनम४हिवायः
चनिवगनायच॥ ॥
तडादवलस्तु॥ॐगभक्तनाम
सहकरवानोस्वाहा॥ॐभूमि
भूमिकेभूम्यात्रिकेनमानयः
विकथन।सस्वत्यसक४सूर
दिकोंकापीनवासिनीस्वाहा॥
॥ ॥दूगनहिविस्तु॥ॐपना

त्रिनामनाजायस्वाहा॥ॐनभा
मुसर्पस्थाडकचपृथिविमनू
यन्नुक्तिक्रियादिविगतस्य४सः
र्षस्थानम४स्वाहा॥ ॥
दूगननिष्कना३स्तु॥ॐनम४
धीनानायधायस्वाहा॥ॐविष्णु
ननादमसिविष्णु४धत्तपणस्तु
विष्णु४सूनसिविष्णु४कुवासि
वेष्टवमसिविष्टवलास्वाहा॥
॥ ॥थानॐनायस्तु॥ॐथा
नगधपदयस्वाहा॥ॐगधानी
त्वागधपतिॐहवामहप्रियाः
नीत्वाप्रियपतिॐहवामहः
निधीनीत्वातिधिपतिॐहवा
महवसाममज्जुहमज्जानिग
रुधमात्वमज्जुहमज्जुधम् ॥
॥ ॥वाक्कधत्वात्वालोका
नाथस्तु॥ॐलोकनाथयस्वा

हा॥ ॐ उं उदु द्य स्वाय पागिडा गृ
हस्त्वमिस्स पूरुं स ॐ सुड थाम
यक्क। अस्मि स धरुं अयूरु न
स्मि वि ल व द वाय ऊ मान थः
सी द र्ग ॥ ॥ ह नू म न्क सु ॥ ॐ
ह नू मा नाय स्वाहा ॥ ॐ ती वी धा
पी कृ ध्व न वृ ष पा न या ध्व न र थ
शि ॥ सह वा ऊ य न्क ॥ अ व का मः
न ॥ पु प द न मि णा म् क्रि न क्रिः
ध न्क न्क प वा य न्क ॥ ॥
ना ध्व न्क ॥ ॐ नृ ह ना थ य स्वा
हा ॥ ॐ न म ॥ स म्क वा य च म र्था
रु वा य च न म ॥ सी क ना य च म य
स्म ना य च न म ॥ धि वा य च धि
व न ना य च स्वाहा ॥ ॥ त्वा न
ना ॥ ॐ ना ना य ध म य स्वाहा ॥
ॐ वि ष्णु न्क म सि वि ष्णु ॥ ॥ न प

श ॥ वि ष्णु ॥ ॥ स य न सि वि ष्णु ध्रुः
वा सि व्क व म सि वि ष्णु व त्वाः
स्वाहा ॥ ॥ मु नि नि स्क ॥ ॐ
उ ति नि द र्थ स्वाहा ॥ ॐ पा व का
न ॥ स न स्त नी र्वा ऊ रि र्वा डि नी व
नी य ह्म व्क धि या व स ॥ स्वाहा ॥
॥ ॐ नृ व वा या ग ॥ ॐ र्ग र्ग रि नि
र्य ॥ स्वाहा ॥ ॐ अ र्म र्वा ना स रु म्मा
नि य नृ डा अ धि र्म म्मा म्। व वा ॐ
स रु मु या ऊ न व ध न्वा नि र्ग म्मा सि ॥
॥ पु थ्वा त ॥ ॐ ना ग ना जा य स्वाहा ॥
ॐ न मा मु स र्प र्था ऊ क व पु थि वि
म न्क ॥ अ न्क नि र्क ऊ दि वि र्ग र्थः
स र्प र्था न म ॥ स्वाहा ॥ ॥
कृ व न्क ॥ ॐ वे ध व ध म य स्वाहा ॥
ॐ कृ वि ण ऊ ऊ व म न्का य व क्रि य
था द न्क नृ पू र्वा ति यू य ॥ ॐ ह ह

षा दुष्टादि रोगां जनानि यवर्हिधान
 मउर्किं याजन्ति ॥ ॥ गृह
 लक्ष्मीस्तु ॥ ॐ गृहलक्ष्मी स्वाहा ॥
 ॐ श्री यवतलक्ष्मी पत्न्या वहा
 नागं पार्ष्वनक्रुणाधि नूपमम्
 हिवनो वा रुम् ॥ ॐ पूं निषानाम्
 मॐ षष्टि सर्वलाकं मॐ षाढास्त
 हा ॥ ॥ स्वॐ षट्पदवस्तु ॥ ॐ
 स्वष्टदवदवीत्यष्टाहा ॥ ॐ श्री
 वरुणं जामदग्नं सगीधिं पूष्टिवर्धनं
 म् ॥ उर्वानूकमिव ववधनामृताम्
 य ॥ श्रीमामृताम् ॥ अयं वरुणं जामदग्नं
 सगीधिं पूष्टिवदनं नू उर्वानूकमि
 ववधनादितामृताय नमः ॥
 स्वाहा ॥ ॥ अकमगकस्तु
 कलस्तु ॥ क्षामदवस्तु ॥ ॐ शि
 पक्षय स्वाहा ॥ ॐ वगुपक्षय

सुस्तनयित्वं । नमस्तुभ्यं
 वन्नमुयत ४ स्व ४ समीहसं ॥ २
 १ ॥ यतायतत ४ समीहसतता
 नाजूरयेकनु ॥ १ ॥ न्न ४ कनुः
 पुज्जरायाजूरयेन ४ पञ्चत्य ४
 ॥ २१ ॥ सुमिगियानजूपडाप
 धय ४ सनुदुमिगियास्तुमेस
 नुयास्तान्दिरिययवयन्दिम
 ४ ॥ २३ ॥ गच्चकुद्वहिनपूनः
 साकुकमुचनत् । पञ्चमम
 नद ४ न्तगीजीवमेननद ४ न्त
 ४ न्तधूपामननद ४ न्तम्यव
 वामननद ४ न्तम्ययथन
 द ४ न्ततात ॥ २४ ॥ ॐ न्तिमच
 म्वाचमुधाय ४ ॥ ॥
 वाहनिमकुशहाति ॥ ३ ॥
 ॐ स्वस्त्याग्रयस्वाहा ॥ ॥
 ॐ त्वन्नाजूरयेवनुदस्यसोः
 हो ॥ ॥ ॥

विहान्दवस्यदञ्जूरयासि
 हीसा ४ । यजिषावद्वितम ४
 ॥ १ ॥ धुचानादिष्वाद ४ सियम्
 मुग्धसम ॥ ॥
 ॐ सत्वन्नाजूरयेसमाहृतातीन
 दिष्टाजूरयाउषसापूष्टाजूरय
 द्दनावनुदा ४ न्ना ४ धावीहिवृ
 जीकाईसुदवाननधि ॥ ॐ जूर
 याश्चा ४ न्तस्यनरिसस्तिपाथः
 मित्वमित्वमयाजूरयासि । जूरया
 नेयहृम्वहास्ययाना ४ धाहिरु
 षऊ ४ स्वाहा ॥ ॐ यतसर्गव
 दीयसहर्मुयहिया ४ पासावित
 तामहाक ४ न्तिन्नाजूरयसवि
 तातविप्रूर्विष्वामेवृमनुः
 त ४ स्वका ४ स्वाहा ॥ ॐ उदुरुमे
 वनुदापाजमसदवाधमीविम
 धम ४ धथाय । जूरयावयमादि

एतन्नागसाञ्जुदिनयथामस्वा
 हा॥ ॥ वरुपादिहामै॥ ॐ पा
 दिनाञ्जुग्रयस्वाहा॥ ॐ पादिनाः
 विन्धवदसस्वाहा॥ ॥
 ॐ यहुपादि विरावसस्वाहा॥
 ॐ सर्वपादि सरकतास्वाहा॥
 ॐ नूनस्यः स्वाहा॥ ॥
 ॐ नूनागि त्रिकुंडहामिस्वाहा॥
 ॐ अगिभकंडहामिस्वाहा॥ ॥
 ॐ अनाह्नागै यदाह्नागै तत्सर्व
 प्रियगममा सर्वतदप्रोक्त्वा
 यदिदिशयथादिनस्वाहा॥ ॥
 ॐ वेष्वा ननाय विष्णुः ॥ अन्नं त्रि
 गायत्रीमहि तन्नांप्रवा दया ॥
 ॥ ॐ दवशतस्येनसा वयऊ
 नमसिस्वाहा॥ ॐ मनूककृतस्ये
 नसा वयऊ नमसिस्वाहा॥ ॐ पि
 रुकृतस्येनसा वयऊ नमसिस्वा

२१ न
 हा॥ ॐ अनासकृगस्येनसा वयऊ न
 मसिस्वाहा॥ ॐ नूनस्येनसा वः
 यऊ नमसिस्वाहा॥ ॐ यच्चाहम
 नाविदा अकानयच्चाविदान्
 स्यसर्वस्येनसा वयऊ नमसि
 स्वाहा॥ ॐ स्वस्ति ॐ उा वृद्धवा
 ॥ स्वस्तिनः ॥ पूषा विन्धवददा ॥ स्व
 स्तिनस्तार्का अलिस्तु ॥ धामि ॥
 स्वस्तिना वृहस्पतिर्दधातु ॥ ॐ
 पयपृथिवीं पयता सधी ॥ अ ॥ प
 यादिनः सखा ॥ यथाधा ॥ पयस्व
 ती ॥ प्रतिसहस्रं नुमर्शम् ॥ ॥
 ॐ विश्वा ननात्मसि विश्वा ॥ अ
 पण्शा विश्वा ॥ स्यु नस्यु सि विश्वा
 ॥ ॐ अग्निर्देवता वाता देव
 ता सूर्या देवता वन्दुमा देवता
 वसवा देवता नूपा देवता दि

[illegible]

श्रीसौसाप(०७॥
 ॐ अथायस्वसमदुर्गविष्णुगङ्गा
 मवृष्टी। एवावाउस्यसंगएथ॥
 ॥१॥ सन्तपयाँसिसमुज्जुवाः
 जा० सैवृष्मान्यलिमातिषादु० १।
 अथायमानाजुमृगचसायदि
 विद्यवानाँसूरुमानिधिर॥
 ॥२॥ अथायस्वमदिक्तमसाम
 विह्वलित्रेँहुरि० एवान०
 सप्रथस्म० सखावृ० ॥३॥
 आनेवसामनायमस्यवसाधि
 संधास्तु० अग्रत्वाकामयाशि
 ना॥ ४॥ मुख्यताजुक्तिनस्तम
 विष्वा० सुक्रितय० पृथक। अ
 त्यकामायधमित्र॥ ५॥ अग्नि०
 प्रियमूधमसूकामारुगस्यरुव
 पैसा। सम्राउकाविनाउनि॥ ६॥
 पय० पृथिवीपयउ। पधीपूय

यादियत्तुनिजपयाध० पयस्व
 ती० पुनिसै० सनुमझु॥ १॥
 ॐ दवस्यत्तासविगु० पसवेविना
 ॐ रेवझनगजसवझवझसाया
 ॐ रिषिश्चमिसनस्वएरेवझ
 नवीर्यायान्नाथायालिषिश्च
 ॐ मीनुसोदियनैवलायधियेय० श
 मलिषिश्चमि॥ ८॥ इपदादि० मू
 मूवान० स्विन्न० स्तातामनादिव०
 पूर्णपविगु० धौकमाप० धुन्धु
 मेनसा॥ ९॥ उदयकमसस्यनिः
 स्व० पद्यकउरुनम० दिवैदवका
 सूर्यमगन्मझविनूरेमू॥ १०॥
 आश्वतलश्रीयपत्त्यावहात्राशपा
 ॐ नक्रगाधिनूपमद्विनोवारु
 म॥ ११॥ निषाधमूम० पाँस० दाः
 वेलादीम० पाध॥ १२॥ नमा
 बुझ० धनमस्तुग्रयनम० पृथि

अथार्यापिपुष्प
 रुकारपाम

येनमाडापधीत्य॥ नमावाचन
 भावनस्यगयनमाविष्टुवमह
 नकनागि॥ १७॥ अरुप्रनिन्दस्य
 सामस्यदवानामुतिरिषयमो
 स्य अत्रिन्कसवेमहिस्थामप्रतन्व
 त॥ १८॥ यदवासादिवीकाः
 दद्यात्पृथिव्यामधकादद्याः
 स्तु॥ अस्मृतिनामहिनेकादद्या
 स्तुतदवासायहूमिमेइडापध
 मू॥ १९॥ १८॥ पुनस्तुतिदित्यानु
 डावसव॥ समिन्धनान्पुनर्वक्त्रा
 द्यावसनीथयह॥ अष्टानत्वेकं
 न्वम्बर्हयस्वसत्या॥ सनुयउमा
 नस्यकामा॥ २०॥ आवुक्कनूवाः
 म्म॥ अष्टवक्कवर्चमीजायगामाया
 इनाज्जिन्या॥ अष्टवक्कवर्चमीजायगामाया
 धीमहाव॥ अष्टवक्कवर्चमीजायगामाया
 नूर्ध्वोधानाशानाद्यु॥ सफि॥ पुन

स्य२
 भिर्याषाडिष्टुन॥ अष्टवक्कवर्चमीजायगामाया
 युवास्य यउमानवीनोजायती
 निकामनिकामन॥ पङ्क्त्या
 वर्षगुरुलवस्यानडापधय॥
 प्रियंकीयागकेमोन॥ कल्पः
 ती॥ २१॥ प्रथमादितीयेदिता
 यास्तुतीयेस्तुतीया॥ सत्यन
 सत्ययहूनयहूयइहिर्यइ
 वृषिसामरि॥ सानाम्भृगिमच
 ॥ पुनानूवाक्कारि॥ पुनानूवाक्का
 याक्कारियाक्कावषक्कावेवषक्काना
 आद्रुगिरिनाद्रुगयामिकोत्सव
 र्दयतुह॥ स्वाहा॥ २२॥ ॥
 ॐ हिमस्यत्वाउनायूनामास्तप
 निव्यामसि॥ उगुरुदाहिनागु
 वाग्निर्दवागुरुषड्का॥ तदिदं
 हिनागुवाग्निर्दवागुरुषड्का॥ २३॥
 अदिकादग्निमैजानदूर्वादसूः

सूक्तं नागसत ॥ अज्ञानं पूं पुं
 शोयां हृदये मे मे हृदये ॥ २ ॥
 विपुनै वने वका काशी वलजा
 तव दकामाय ॥ मायन कृपु
 जय धर्म नक्षत्र मूलो नव पिंगुल
 लाहिन गयी वक्र पूत धुन मायु
 ग ॥ ३ ॥ अस्मान् न पतिह न स्या
 मोर्न सागन स्ये मियार्य था ०
 उरुगं ददा पुव नृधं त्वमहिषि
 कुरु ॥ ४ ॥ अणवस्तु निधनः
 वक्रा निज यत्नै वृक्षत उसा ॥
 कपिल उटी सर्व रुद्रं वाग्मि पु
 त्यक्र देवर्ग ॥ ५ ॥ वनृधं कुरु
 धां अं गं मम पूगं यन कृति या
 वदादि त्यस्त पति या वक्रा उगि
 वलु माया वदा गल वयु गि यो ॥
 वल्ली वल या सह ॥ ६ ॥ यन क
 न पुका नक्षत्र माहना कान डि



वनि ॥ पद पामूप काना धर्म य
 झा वति मजी वनि ॥ तुं क हरि
 हं कि ना द हान त्वे वि पून न
 पृथिवी न्वं गु अ त्वे क कुरु ॥
 धां धुने ॥ १ ॥ ० ति हि म
 स्यत्वा ॥ ॥ मधुलै कान यजा
 यथा द वस्य मृनि ॥ ॥
 आसी सा प ॥ १० ॥ ॥
 तुं न मा अ गये ॥ गं अर्क का
 कि विवर्त र व क लूष रुने पा
 वने रुद्र वस्य ४ सर्वी अं वाफि
 विव्य मूनि जन न मिरी रुक्त ना
 हा कि सुहं ॥ उका अत्यं तना सा
 कन कमय कने सूक्त सूक्त नि
 सूक्त वन्द वधु र्द्य कर्ण दि उनि
 शिव गुने सा विक र व री ॥
 यय यरु पूरै स्का दि नि वि दि हि
 समा सा स्ति ता द व ना या कुरु
 वा व द्रि मध्य सक य प रि उ ना

रुवगु ॥ नाकाधर्मविजयपना
 मुप्रजासूखीनः सन् ॥ सर्व
 सत्तासूखीरुवगु पङ्कनकाले
 वर्षीरुवगु ॥ नाहुहुर्लरुवगुः
 दिपदश्चगुस्पदस्याः भक्तिरुव
 गुपूश्चिरुगु ॥ दवावर्षनुकाले
 जनयगिवसूक्षाः भग्नसंपत्य
 मूर्द्धावर्षानूनायाद्यासन्नुभवाः
 नयनविपुत्रमनीपागुनाकाध
 निगी ॥ सूर्यकासाधूपूणाकूलः
 युवगिजनापागुदारवीविनाः
 लोकानारुकिरावारुवगुखः
 लूसदाहकिन्नवाधिवाम् ॥
 नादाधिपगिधीधीऊयऊग
 त्मलदवस्यखः सिसिद्धिनम् ॥
 सगधपनिवानस्यः आयूनाना
 रुऊनधनलश्रीसन्तगिसका
 नवृद्धिनम् ॥ यऊमानस्ययः

था भाम्ना कुरुल सै पा फारु व
 नु ॥ अयूना नाहू नेव्यर्णजन
 धनल श्री सनगि सना नवृद्धि
 नमु ॥ यज मानी ना अचल सि
 नून ममु अहमपिल श्री सना
 वृद्धि नमु ॥ मनु मूडारु किला
 वना ध्यान नायज किं विगु गत्स
 र्वनि दाष ममु ॥ अहाना हान
 ना वाक्य महु र्गै यत्कर्ग वापि
 लि कं मूडा पूजा विधाने कमम
 न वलि रिमु गय हू नम हू ॥
 यहा यहु षूदा पाद निन पिन
 दूर्गि सर्व ला के कना थं सर्व सै
 पूर्यु मनु कलन दूग वरु पा उर
 लि ४ सप्र सन्न ॥ दाष धा वाक
 नरु किला वा वापल्या दू ४ खे मू
 नय ४ प्ररा वा नूना धि के मनु
 कृपा धनं धा क्रम स्व द वामन

दासहन्ता॥ त्वेगगिसर्वरुगानी
 सेस्तिनेसचनावने॥ अकृष्ण
 न्दहारुगानीदृष्टात्वेपनमन्व
 न॥ कर्मधामनसावावाग
 नान्यायादिकर्मधामा॥ अकृष्ण
 वाक्कहीनननुत्तपूत्रदृगाम
 न॥ मनुहीनेक्रियाहीनरुक्मि
 हीनेतरथेवच॥ उपहामाचर्च
 धाहीनेक्रमतीपनमन्व
 ॥ ॥ अकृष्णभूदि॥ ॥ ॐ
 अग्निभूषिःपवमानःपाश्च
 जनपूनादिगःकमीमहमह
 दयः॥ ॥ अग्निभूषिर्विदध
 ॐ यस्यकृष्णगृहहविस्ताम
 एवर्द्धयात्वम्। गस्मेदवाजु
 धिवुवन्नयश्चवक्ष्येदस्यनिष्ठा
 ॥ ॥ अग्निभूषिर्विदध
 ॐ ध्रुवांसिध्रुवार्येयजमानाः

स्मिन्नायगनप्रथयापधुतिरु
 याग॥ घृतनशावापृथिवीपूर्य
 थामिनुस्यक्तुदिनसिद्विब्धु
 नस्यक्ताया॥ यजमानग्राहि
 र्वादा॥ ॥ मधुल्यास्नान॥
 ॐ उलिखतु प्रधास्यगयै दव
 दवयन्कस्तमह उपपयन्कुः
 मनूग॥ सुदानव०० नुपाधू
 वासवा॥ ॥ बुध्राविसर्जने॥
 ॐ विष्णु ननाटमसिविष्णु॥ ४८८
 यथाविष्णु॥ ४८९ नसिविष्णु॥ ४९०
 वासि॥ वेष्णुवमसिविष्णुवत्वा॥
 ॥ ॥ पृथिवीविसर्जने॥ ॥
 ॐ कस्तुविमू३ गित्वाविमू
 ३ गि॥ कस्तुविमू३ गित्वाविमू
 ३ गि॥ पाषाणनक्रः
 सीराणासि॥ ॥ बुध्रादर्श
 मावनी॥ ॥ ॐ जूपाजूयाः

मन्वाविषं वसनसमसृष्ट
 हि। पयत्नानरग्नानामन
 मासं सृज कर्षसापुत्रयाचध
 ननचा॥ पृथीतादकनारिष
 कं॥ ॥ ॐ समहिनः
 द्वाहं हविषाद्युगनसमादिः
 लेचंसुरि ४ संगवृष्टि ४ास
 मिन्द्राविष्णुदवाहिनकोदि
 यन्नरागकृदुयस्वाहा॥ ॥
 अक्रपाकृदुयस्वाहा॥ ॥
 रुद्रयागा॥ ॥ ॐ गनुपाजु
 एनसितेनैमपाशयूर्धजुए
 स्या॥ पुमर्दहिवर्धाजुएनसि
 वधमिदहि। अरुणयमगन्वा
 पुनरुनमजुवृधा। मधामदर्व
 सविताअधादवीसुनस्वतीजु
 दधापुमधावन्विनादवावाध
 लापूक्षनमुजोअंगमनिचभू

तुमेधा३

पायनीवाग्नानचक्र ४२थातुं
 सावली॥ हस्तसैलवने॥ ॥
 ॐ गायुर्वेदमदरग्न ४कथपस
 गायुर्वे। यदवषुणायुषंकनः
 अमुणायुषम्॥ एभानगिलः
 कैकावयगु॥ ॥ ॐ यरुयहं
 गच्छयहूपर्णिगच्छस्थानिभ
 क्त्वाहा। वषणयहूपगस
 रुद्रकवाक ४ सर्ववीनमैद्रुष
 स्वस्वाहा॥ ॥ अर्घपाणादक
 नअग्निक्वदुवदयगु॥ ॥
 यरुविसर्जनै॥ ॐ गच्छगच्छ
 नरघृष्टआत्मसंसाववाहनः।
 यगवप्रालयैदवगुगगच्छ
 नासना॥ ॥ नाम्बूलैदद्यात्॥
 ॐ उदयनमसस्यनिस ४पृथक्
 उरुनम। दर्वन्दवतासूर्यमग
 न्मकातिनूरुमम्॥ ॥ क्रम

स्वनमस्तुत्या ॥ ॐ नमो नानावृ
 धीमदं ननु यद्वा यम ननु यद्वा
 पनय दवी स्वस्ति नमो नस्वस्ति
 मानुक्रय ॥ उर्ध्वदिगं गुरु षडैः
 श्रीरक्षामुद्रिपदस ॥ ३ गुस्पद ॥
 ॥ ॥ अग्निनमस्तुत्या ॥ सख
 हाम ॥ ॐ ॥ ४ स्वाहा ॥ ॐ शुक्ल
 स्वाहा ॥ ॐ ॥ ४ स्वाहा ॥ ॐ हर्षुवंस
 ४ स्वाहा ॥ ॥ वज्रकाश ॥ ३
 यातु ॥ ॥ ॐ कृताय कर्मनः
 स्वाहा ॥ ॐ अकृताय कर्मरक्ष
 हा ॥ ॥ हस्तप्रकाल्या चम
 ४ ॥ ॥ न्यासलिकाय ४ ॥ महा
 वाहनिमनुदा ॥ मिश्रवभ ४ ॥
 ॥ वायुनि ॥ ॐ उदयनमसस्पनि
 स्व ४ प ४ न उरु नमादवैदव
 गसूर्यमगनम ॥ नि नूरुमम ॥
 ॥ ॥ अभुधाविसर्जनी ॥ ॥

वलिथायथायैच्छाया ॥ ॥
 तत ४ यजमानसिंहासनस्थि
 त्वा ॥ ॥ अरिक्तकैकानयणा ॥
 कृत्स्ननद्वननतया ॥ सिन्धुमूढ
 ज्ञायथकालिनकिनि ॥ ॥
 ॐ धीवत्समालाहमाविधानैः
 पवमानमदीयग ॥ धान्यधनैष
 सैवद्रूपगुणारैसनसंवत्सरैः
 दीर्घमायु ४ ॥ ॥
 अरिसर्व ॥ ॐ दवस्यत्वासवि
 गु ४ ५ सवेध्विना वाद्रुयापूष्पाः
 रुक्मरुवा ॥ अग्निनो रैषश्चनग
 जसंवद्रवर्चसारिषिश्चामि
 सनस्वये रैषश्चनवीर्यायान्त्र्य
 शारिषिश्चामीन्द्रस्यैन्द्रियधवला
 यधियेयसरधारिषिश्चामि ॥
 चन्दनी ॥ ॐ यददकववृगुरुः
 नृदग ॥ अरिसूर्या ॥ सर्वकदि